मई दिवस के अमर शहीदो को शत्–शत् नमन

प्रिय साथियों ,

यह मई दिवस की 125वीं वर्षगांठ है। जैसा कि आप सभी को विदित है कि 1 मई 1886 को अमेरिका के शिकागो शहर में 8 घण्टे की डयूटी की मांग को लेकर सफेद झण्डें के साथ सड़क पर उतरे सैकड़ो श्रमिक पुलिस की गोलियों के शिकार हो गये और उनके खून से सफेद झण्डा लाल हो गया जो आज भी हमें उन अमर शहीदो की कुर्बानियों की याद दिलाता है। मई के उन अमर शहीदों ने शायद यह सोचा होगा कि उनकी शहादत से तमाम मजदूर आवाम का भला हो जायेगा पर आज भी उन अमर शहीदो के ख्वाब अधूरे है और सारी दूनियॉ में मजदूरों के हालात दिन ब दिन खराब होते जा रहे है। एक बात तो सच है कि शिकागो के अमर शहीदो ने दूनियॉ के तमाम मजदूरों को संगठित होकर संघर्ष करने का रास्ता दिखाया। यही नही इस घटना के विरोध करने पर जहॉ तमाम मजदूरों को जेल और यातनायें दी गई वहीं उनके अगुआ लूशी पसर्नस, अगस्त स्पाइस, एडोफ फिशर्स और जार्ज एजिलिंस को फांसी पर लटका दिया गया। इन घटनाओं ने दूनियॉ के सारे मजदूरों को हिला देने का काम किया और तभी से **"इन्टरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस"** के आह्वान पर सारी दुनियॉ में **1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस** के रुप में मनाने का काम किया जाता है।

हमारे देश में भी वैसे तो केन्द्र और राज्य सरकारे इस अवसर पर मजदूरों के लिए कुछ नई योजनाओं की घोषणा करती है , और मजदूरो के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करती है परन्तु हकीकत यह है कि भारत वर्ष का मजदूर बराबर शोषण और असमानता की चक्की में पिस रहा है। इस देश में 95 प्रतिशत मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करता है जिनके लिए न तो कोई न्यूनतम वेतन , न कार्य के घन्टो का निर्धारण और ना ही कोई सामाजिक सुरक्षा है। मालिक जब चाहे उन्हे नौकरी पर रक्खें और जब चाहे निकाल दे , इनके लिए श्रम कानून बेमानी है जो कही भी लागू नही होते। दूसरी ओर मजदूर आंदोलन राजनीति, जाति , घर्म ,भाषा के नाम पर विभाजित होकर हर समय बचाव की मुद्रा में रहता है जिससे मजदूरों का शोषण बराबर बढ़ता जा रहा है। हालांकि हाल ही में महंगाई , बेरोजगारी, श्रम कानूनों का अनुपालन, निजी श्रेत्र को न बेचे जाने के सवाल पर सभी श्रम संगठनों का एक मंच पर आना और 23 फरवरी 2011 को दिल्ली में हुए अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक प्रदर्शन में जिस तरह लामबंद होकर मजदूरों की एकता का परिचय दिया है वह निश्चय ही एक आशा की किरण है। ऐसी एकता ही मई के उन अमर शहीदों को एक सच्ची श्रंद्वाजलि हो सकती है।

आइये हम सब मिलकर मई दिवस के अमर शहीदों को श्रंद्वापूर्वक नमन करे और उनके खून से रंगे इस लाल झण्डे को मजबूती से पकड़कर मजदूर आंदोलन को इतना सशक्त बनाने का प्रयास करे जिससे देश के असंगठित क्षेत्र मे कार्य कर रहे 95 प्रतिशत श्रमिको के हितों की रक्षा की जा सकें।

शुभकामनाओ सहित।

आपका साथी

शिवगोपाल

(शिव गोपाल)
महामंत्री